INFUSION NOTES
WHEN ONLY THE BEST WILL DO

HANDWRITTEN NOTES

R.A.S.

RAJASTHAN PUBLIC SERVICE COMMISSION

मुख्य परीक्षा हेतु

PAPER-1

[भाग -1]

इतिहास + कला एवं संस्कृति (राजस्थान)

अध्याय – 1 प्रागैतिहासिक का काल से 18 वीं शताब्दी के अवसान तक राजस्थान के इतिहास के प्रमुख युगांतकारी घटनाएँ -

1. प्रागैतिहासिक स्रोत

2. प्राचीन स्थल

3. महत्वपूर्ण राजवंश

- गुर्जर प्रतिहार वंश, मारवाड़ वंश, मेवाड़, परमार ,जाट, यादव, मुग़ल राजवंश मराठा शासन का विस्तार इत्यादि /

4. राजवंशों की प्रशासनिक एवं राजस्व व्यवस्था

INFUSION NOTES
WHEN ONLY THE BEST WILL DO
FREE SAMPLE

अध्याय – 2 19 वी - 20वीं शताब्दी की प्रमुख घटनाएं -

1. किसान एवं जनजाति आन्दोलन,

2. राजनीतिक जागृति एवं स्वतन्त्रता संग्राम

- राजनीतिक संधियाँ, राजस्थान में 1857 की क्रांति, प्रजामंडल आन्दोलन इत्यादि

3. एकीकरण।

अध्याय – 3 राजस्थान की धरोहरः-

प्रदर्शन व ललित कलाएं –

- स्थापत्य कला (मंदिर,किले एवं महल छतरियां , हेवालियाँ इत्यादि), चित्र कला इत्यादि
- हस्तशिल्प व वास्तुशिल्प
- राजस्थान में विश्व विरासत के प्रमुख स्थल और पर्यटन
- मेले एवं पर्व
- लोक संगीत व लोक नृत्य

अध्याय – 4 राजस्थानी साहित्य की महत्वपूर्ण कृतियाँ एवं राजस्थान की बोलियाँ।

अध्याय – 5 राजस्थान के संत संप्रदाय एवं लोक देवता, देवियाँ

अध्याय – 6 महत्वपूर्ण विभूतियाँ।

अध्याय – 7 अन्य विविध टॉपिक

FREE SAMPLE

नोट -

प्रिय छात्रों, Infusion Notes के RAS MAINS के sample notes आपको पीडीऍफ़ format में "फ्री" में दिए जा रहे हैं और complete Notes आपको Infusion Notes की website या (Amazon/Flipkart) से खरीदने होंगे जो कि आपको hardcopy यानि बुक फॉर्मेट में ही मिलेंगें | किसी भी व्यक्ति को sample पीडीऍफ़ या complete Course की पीडीऍफ़ के लिए भुगतान नहीं करना है | अगर कोई ऐसा कर रहा है तो उसकी शिकायत हमारे Phone नंबर 8233195718, 0141-4045784 पर करें, उसके खिलाफ क़ानूनी कार्यवाई की जाएगी |

FREE SAMPLE
INFUSION NOTES
WHEN ONLY THE BEST WILL DO

अध्याय – 1

प्रागैतिहासिक का काल से 18 वीं शताब्दी के अवसान तक राजस्थान के इतिहास के प्रमुख युगांतकारी घटनाएँ

1. प्रागैतिहासिक स्रोत
2. प्राचीन स्थल
3. महत्वपूर्ण राजवंश
4. राजवंशों की प्रशासनिक एवं राजस्व व्यवस्था

1. प्रागैतिहासिक स्रोत -

- राजस्थान इतिहास के जनक कर्नल जेम्स टाड़ कहे जाते है। वे 1818 से 1821 के मध्य मेवाड़ (उदयपुर) प्राप्त के पोलिटिकल एजेन्ट थे उन्होंने घोड़े पर धूम-धूम कर राजस्थान के इतिहास को लिखा।
- अतः कर्नल टॉड़ को "घोड़े वाले बाबा" कहा जाता है। इन्होनें "एनाल्स एण्ड एंटीक्वीटीज ऑफ़ राजस्थान" नामक पुस्तकालय का लन्दन में 1829 में प्रकाशन करवाया।
- गौरी शंकर हिराचन्द ओझा (जी.एच. ओझा) ने इसका सर्वप्रथम हिन्दी में अनुवाद करवाया। इस पुस्तक का दूसरा नाम "सैंटर्ल एण्ड वेस्टर्न राजपूत स्टेट ऑफ़ इंडिया" है।

- कर्नल जेम्स टॉड़ की एक अन्य पुस्तक "ट्रेवल इन वेस्टर्न इण्डिया" का इसकी मृत्यु के पश्चात् 1837 में इनकी पत्नी ने प्रकाशन करवाया।
- अभिलेख एवं प्रशस्तियाँ पत्थर या धातु की सतह पर उकेरे गए लेखों को अभिलेखमें सम्मिलित किया जाता है।
- अभिलेखों में शिलालेख, स्तम्भ लेख, मूर्ति लेख, गुहा लेख आदि को सम्मिलित किया जाता है।

- तिथि युक्त एवं समसामायिक होने के कारण पुरातात्विक स्रोतों के अन्तर्गत अभिलेख सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण है।
- प्रारम्भिक अभिलेखों की भाषा संस्कृत थी जबकि मध्यकाल में इनमें उर्दू, फारसी व राजस्थानी भाषा का प्रयोग भी हुआ।
- अभिलेखों के अध्ययन को एपिग्राफी कहा जाता है।
- भारत में प्राचीनतम अभिलेख सम्राट अशोक मौर्य के हैं जिनकी भाषा प्राकृत एवं मगधी तथा लिपि ब्राह्मी मिलती है।
- शक शासक रुद्रदामन का जूनागढ़ अभिलेख भारत का पहला संस्कृत अभिलेख है।
- राजस्थान के अभिलेखों की मुख्य भाषा संस्कृत एवं राजस्थानी है तथा इनकी लिपि महाजनी एवं हर्ष लिपि है।
- फारसी भाषा मे लिखा सबसे पुराना लेख अजमेर के ढाई दिन के झोंपड़े के गुंबज की दीवार के पीछे लिखा हुआ मिला है। यह लेख लगभग 1200 ई.का है।

अशोक के अभिलेख :

- मौर्य सम्राट अशोक के दो अभिलेख भाब्रू अभिलेख तथा बैराठ अभिलेख बैराठ की पहाड़ी से मिले हैं।
- भाब्रू अभिलेख की खोज कैप्टन बर्ट द्वारा बीजक की पहाड़ी से की गई. इस अभिलेख सेअशोक के बौद्ध धर्म के अनुयायी होने तथा राजस्थान में मौर्य शासन होने की जानकारी मिलती है।
- अशोक का भाब्रू अभिलेख वर्तमान में कलकत्ता संग्रहालय में सुरक्षित है।

बड़ली का अभिलेख :-

- यह राजस्थान का सबसे प्राचीनतम अभिलेख है। 443 ई.पूर्व का यह अभिलेख अजमेर के बड़ली गाँव के मिलोत माता मंदिर से पं. गौरीशंकर हीराचन्द ओझा को प्राप्त हुआ।
- वर्तमान में यह अजमेर संग्रहालय में सुरक्षित है।

बसंतगढ़ अभिलेख (625 ई.):-

- राजा वर्मलात के समय का यह अभिलेख बसंतगढ़ सिरोही से प्राप्त हुआ है।

- इससे अर्बुदांचल के राजा रजिल तथा उसके पुत्र सत्यदेव के बारे में जानकारी मिलती है।
- इसका लेखक द्विजन्मा तथा उत्कीर्णकर्ता नागमुण्डी था।
- दधिमति माता अभिलेख के बाद यह पश्चिमी राजस्थान का सबसे प्राचीन अभिलेख है।
- इस अभिलेख में सामन्त प्रथा का उल्लेख मिलता है।

मानमोरी का अभिलेख :--

- 713 ई. का यह अभिलेख मानसरोवर झील (चित्तौड़गढ़) के तट पर उत्कीर्ण है।
- इस अभिलेख में इसके रचयिता पुष्य तथा उत्कीर्णकर्ता शिवादित्य का उल्लेख है।
- इस अभिलेख से चित्तौड़गढ़ दुर्ग का निर्माण करने वाले चित्रांगद के बारे में जानकारी मिलती है।
- राजा भोज के पुत्र मान द्वारा मानसरोवर झील के निर्माण करवाये जाने का उल्लेख भी इसमें मिलता है।
- यह अभिलेख कर्नल जेम्स टॉड़ ने इंग्लैण्ड ले जाते समय समुद्र में फेंक दिया था।
- इस अभिलेख में अमृत मंथन का उल्लेख मिलता है।
- इस अभिलेख में चार मौर्य शासकों (महेश्वर, भीम, भोज एवं मान) के बारे में जानकारी मिलती है।

मण्डोर अभिलेख :-

- जोधपुर के मंडोर में स्थित 837 ई. के इस अभिलेख में गुर्जर प्रतिहार शासकों की वंशावली तथा शिव पूजा का उल्लेख किया गया है। इस अभिलेख की रचना गुर्जर शासक बाउक द्वारा करवाई गई थी।

प्रतापगढ़ अभिलेख (946 ई.):-

- प्रतापगढ़ में स्थित इस अभिलेख में गुर्जर प्रतिहार शासक महेन्द्रपाल की उपलब्धियों का वर्णन किया गया है।

बड़वा अभिलेख :- यह बड़वा (कोटा) में स्तम्भ पर उत्कीर्ण मोखरी वंश के शासकों का सबसे प्राचीन अभिलेख है। संस्कृत भाषा में लिखित इस अभिलेख से मोखरी शासकों बल,सोमदेव, बलसिंह आदि की उपलब्धियों की जानकारी प्राप्त होती है।

कणसवा का अभिलेख :-

- 738 ई. का यह अभिलेख कोटा के निकट कणसवा गाँव में उत्कीर्ण है जिसमें मौर्य वंश के राजा धवल का उल्लेख मिलता है।

आदिवराह मन्दिर का अभिलेख :

- 944 ई.का यह लेख उदयपुर के आदिवराह मन्दिर से प्राप्त हुआ है जो संस्कृत में ब्राह्मीलिपि में उत्कीर्ण है।
- यह लेख मेवाड़ के शासक भर्तृहरि द्वितीय के समय का है।
- इसके अनुसार आहड़ एक धर्म स्थल के रूप में

INFUSION NOTES
WHEN ONLY THE BEST WILL DO
FREE SAMPLE

नोट – प्रिय पाठकों , **यह एक sample मात्र है** यह अध्याय अभी यहीं समाप्त नही हुआ है, इसमें अभी और भी कंटेंट पढ़ना बाकी है जो आपको **RAS मुख्य परीक्षा के** कम्पलीट नोट्स में पढ़ने को मिलेगा / यह तो एक sample मात्र ही है/ **RAS मुख्य परीक्षा के** कम्पलीट नोट्स खरीदने के लिए हमारे संपर्क नंबर पर कॉल करें , धन्यवाद/

संपर्क करें – 8233195718, 9694804063, 8504091672

हमारे नोट्स के अन्य परीक्षाओं में रिजल्ट (Result)-

RAS Pre. परीक्षा 2021 में हमारे नोट्स में से 73/74 प्रश्न आये

पटवारी परीक्षा 2021 में 23 अक्तूबर की पहली शिफ्ट में हमारे नोट्स में से 79 प्रश्न आये

पटवारी परीक्षा 2021 में 23 अक्तूबरकी दूसरी शिफ्ट में हमारे नोट्स में से 103 प्रश्न आये

पटवारी परीक्षा 2021 में 24 अक्तूबर की पहली शिफ्ट में हमारे नोट्स में से 96 प्रश्न आये

पटवारी परीक्षा 2021 में 24 अक्तूबर की दूसरी शिफ्ट में हमारे नोट्स में से 91 प्रश्न आये

राजस्थान SI 2021 की परीक्षा कि परीक्षा में भी कई प्रश्न आये हैं -

Proof देखने के लिए हमारे youtube चैनल (InfusionNotes) पर इसकी वीडियो देंखें या हमारे नंबरों पर कॉल करें।

FREE SAMPLE
INFUSION NOTES
WHEN ONLY THE BEST WILL DO

- **मारवाड़ का इतिहास**

राठौड़ वंश

राजस्थान के उत्तरी पश्चिम भाग में जिस राजपूत वंश का शासन् हुआ उसे राठौड़ वंश कहा गया है । उसे मारवाड़ के नाम से जाना जाता है । मारवाड़ में पहले गुर्जर प्रतिहार वंश का राजा था । प्रतिहार यहाँ से कन्नौज (उत्तरप्रदेश) चले गये । फिर राठौड़ वंश कि स्थापना इस भाग में हुई तथा मारवाड़ कि संकटकालीन राजधानी ' शिवाना दुर्ग ' को कहा जाता था ।

शाखा	स्थापना	संस्थापक
1. मारवाड़ (जोधपुर)	1240 ई.	राव सीहा
2. बीकानेर	1465 ई.	राव बीका
3- किशनगढ़	1609 ई.-	किशनसिंह

हम इस अध्याय में मारवाड़ के राठौड़ वंश का विस्तृत अध्ययन करेंगे ।

उत्पत्ति

- राठौड़ शब्द की व्युत्पत्ति राष्ट्रकूट शब्द से मानी जाती है ।
- पृथ्वीराजरासो, नैणसी, दयालदास और कर्नल टॉड़ राठौड़ों को कन्नौज के जयचन्द गहड़वाल का वंशज मानते हैं । ।
- 'राष्ट्रोढ वंश महाकाव्य में राठौड़ों की उत्पत्ति शिव के शीश पर स्थित चन्द्रमा से बताई है ।
- डा. हार्नली ने सर्वप्रथम राठौड़ों को गहड़वालों से भिन्न माना है । इस मत का समर्थन डा. ओझा ने किया हैं ।
- डा. ओझा ने मारवाड़ के राठौड़ों को बदायूँ के राठौड़ों का वंशज माना हैं ।

मारवाड़ (जोधपुर) के राठौड़ संस्थापक – राव सीहा (1240 – 1273)

- राव सीहा जी राजस्थान में स्वतंत्र राठौड़ राज्य के संस्थापक थे । राव सीहा जी के वीर वंशज अपने शौर्य, वीरता एवं पराक्रम व तलवार के धनी रहे हैं ।मारवाड़ में राव सीहा जी द्वारा राठौड़ साम्राज्य का विस्तार करने में उनके वंशजो में राव धुहड़ जी , राजपाल जी , जालन सिंह जी ,राव छाडा जी , राव तीड़ा जी , खीम करण जी ,राव वीरम दे , राव चुडा जी , राव रिदमल जी , राव जोधा , बीका , बीदा, दूदा , कानध्ल , मालदेव का विशेष क्रमबद्ध योगदान रहा है । इनके वंशजों में दुर्गादास व अमर सिंह जैसे इतिहास प्रसिद्ध व्यक्ति हुए। राव सिहा सेतराम जी के आठ पुत्रों में सबसे बड़े थे। !

चेतराम सम्राट के, पुत्र अस्ट महावीर !
जिसमे सिहों जेस्ठ सूत , महारथी रणधीर ।

- राव सिहाँ जी सं. 1268 के लगभग पुष्कर की तीर्थ यात्रा के समय मारवाड़ आये थे उस मारवाड़ की जनता मीणों, मेरों आदि की लूटपाट से पीड़ित थी , राव सिहा के आगमन की सूचना पर पाली नगर के पालीवाल ब्राहमण अपने मुखिया जसोधर के साथ सिहा जी मिलकर पाली नगर को लूटपाट व अत्याचारों से मुक्त करने की प्रार्थना की। अपनी तीर्थ यात्रा से लौटने के बाद राव सिहा जी ने भाइयों व फलोदी के जगमाल की सहायता से पाली में हो रहे अत्याचारों पर काबू पा लिया एवं वहाँ शांति व शासन् व्यवस्था कायम की, जिससे पाली नगर की व्यापारिक उन्नति होने लगी।

आठों में सिहाँ बड़ा ,देव गरुड़ है साथ ।
बनकर छोडिया कन्नोज में ,पाली मारा हाथ ।
पाली के अलावा भीनमाल के शासक के अत्याचारों की जनता की शिकायत पर जनता को अत्याचारों से मुक्त कराया ।
भीनमाल लिधी भडे,सिहे साल बजाय।
दत दीन्हो सत सग्रहियो, ओ जस कठे न जाय।

- पाली व भीनमाल में राठौड़ राज्य स्थापित करने के बाद सिहा जी ने खेड़ पर आक्रमण कर विजय कर लिया।
- इसी दौरान शाही सेना ने अचानक पाली पर हमला कर लूटपाट शुरू करदी ,हमले की सूचना मिलते ही सिहा जी पाली से 18 KM दूर बिठू गावं में शाही सेना के खिलाफ आ ड़टे, और मुस्लिम सेना को खधेड़ दिया। वि. सं . 1330 कार्तिक कृष्ण दवादशी सोमवार को करीब 80 वर्ष की उमर में सिहा जी स्वर्गवास हुआ व उनकी सोलंकी रानी पार्वती इनके साथ सती हुई ।
- सिहाजी की रानी (पाटन के शासक जय सिंह सोलंकी की पुत्री)से बड़े पुत्र आस्थान जी हुए जो पिता के बाद मारवाड़ के शासक बने । राव सिहं जी राजस्थान में राठौड़ राज्य की नीवं डालने वाले पहले व्यक्ति थे

महत्वपूर्ण तथ्य -

- मारवाड़ के राठौड़ वंश का संस्थापक/राठौड़वंश का आदि पुरूष कहा जाता है।
- राव सीहा पुरस्कार मारवाड़ फाउण्डेशन द्वारा दिया जाता है। 2012-13 का राव सीहा पुरस्कार विजयदान देथा को तथा 2013-14 का राव सीहा पुरस्कार डॉ० दलबीर भण्डारी को दिया गया है।
- विजयदान देथा इन्हीं बिज्जी नाम से जाना जाता है। इनका जन्म बोरंदा, जोधपुर में हुआ। इन्हें राजस्थान का शेक्सपीयर कहा जाता है।
- बातां री फुलवारी (14 खण्ड), अलेखूं हिटलर, बापू के तीन हत्यारे, दुविधा उपन्यास (इस पर पहेली फिल्म बनी) लिखा। 2012-13 का राव सीहा पुरस्कार इन्हें दिया गया तथा राजस्थान का सर्वोच्च असैनिक सम्मान राजस्थान रत्न से भी इन्हें नवाजा गया है।
- दलबीर भण्डारी जोधपुर में जन्में डॉ० दलबीर भण्डारी वर्तमान में अंतर्राष्ट्रीय न्यायालय हेग, नीदरलैण्ड में न्यायाधीश के पद पर कार्यरत है।
- मारवाड़ के राठौड़ वंश के संस्थापक, तथा मारवाड़ के राठौड़ों का संस्थापक या आदि पुरुष भी कहा जाता है ।
- राव सीहां कुंवर 'सेतराम' का पुत्र था उसकी रानी सोलंकी वंश की 'पार्वति थी ।

- 13 वीं शताब्दी में जब तुर्कों ने कन्नौज को आक्रमण कर बरबाद कर दिया तो राव सीहा मारवाड़ चला आया ।
- राव सीहा ने सर्वप्रथम पाली (वर्तमान) के निकट अपना साम्राज्य स्थापित किया ऐसा कहते हैं कि उन्होंने पाली के पालीवाल ब्राह्मणों को मेर व मीणाओं के अत्याचार से मुक्ति दिलाई उनकी रक्षा की तथा उसके पश्चात् उनके आग्रह पर वहीं आकर बस गया ।
- पाली के समीप बीठू गाँव के देवल के लेख से सीहा की मृत्यु की तिथि 1273 ई. निश्चित होती है ।इस लेख के अनुसार सीहा सेतकुँवर का पुत्र था । उसकी पत्नी पार्वती ने उसकी मृत्यु पर इस देवल का निर्माण करवाया था ।इस लेख के अनुसार सीहा की मृत्यु बीठू गाँव (पाली) में मुसलमानों से गायों कि रक्षा करते हुए युद्ध के दौरान हुई थी । इस लेख पर अश्वारोही सीहा को शत्रु पर भाला मारते हुए दिखाया गया है । इस लेख से प्रमाणित होता है कि इस समय राठौड़ों का राज्य विस्तार पाली के आस-पास ही सीमित था ।
- राव सिहा के पश्चात् उनका पुत्र आसथान गद्दी पर बैठा ।

आस्थान (1273 – 1291)

- सीहा के बाद आसथान राठौड़ों का शासक बना। उसने गूँदोज को केन्द्र बनाया। 1291 ई. में सुल्तान जलालुद्दीन खिलजी के आक्रमण के समय पाली की रक्षा करते हुए आसथान वीरगति को प्राप्त हुआ
- आसथान के पुत्र धूहड़ ने राठौड़ों की कुलदेवी चक्रेश्वरी ; नागणेची द्ध की मूर्ति कर्नाटक से लाकर नगाणा गाँव (बाड़मेर) मे स्थापित कराई ।
- इनके छोटे भाई का नाम धांधलश् था। ये लोकदेवता पाबू जी के पिता थे।

राव चुंडा (1383 – 1423)

- राव चूडा विरमदेव का पुत्र था ।

- राव चूडा राठौड़ों का प्रथम महत्वपूर्ण शासक माना जाता हैं । अपने पिता की मृत्यु के समय चूडा छः वर्ष का था । इसलिए उसकी माता ने उसे चाचा मल्लिनाथ के पास भेज दिया। मल्लिनाथ ने चूडा को सालोड़ी गाँव जागीर में दिया था ।
- उसने इन्दा शाखा के राजा की पुत्री किशोर कुंवरी (मण्डोर ए जोधपुर) से विवाह किया तथा दहेज मे उसे मण्डौर दुर्ग मिला ।
- चूडा ने इन्दा परिहारों के साथ मिलकर मण्डौर को मालवा के सूबेदार से छीन लिया तथा मण्डौर को अपनी राजधानी बनाया।
- इस प्रकार इन्दा परिहारों को अपना सहयोगी बनाकर राव चूडा ने मारवाड़ में सामन्त प्रथा की स्थापना की।
- उसने जलाल खां खोखर को पराजित कर नागौर पर अधिकार कर लिया था ।
- परन्तु जैसलमेर के भाटियों और जांगलप्रदेश के सांखलाओं के नागौर पर आक्रमण के समय 1423 ई. में चूडा मारा गया ।
- राव चूडा ने नागौर के पास चूण्डासर कस्बा बसाया ।
- उसकी रानी चाँद कँवर ने जोधपुर की चाँदबावड़ी का निर्माण करवाया था ।

<u>रावल मल्लिनाथ</u>

राजस्थान के प्रसिद लोकदेवता इन्होंने अपनी राजधानी 'मेवानगर' (नाकोड़ा) बनायी। दृ मल्लीनाथ के नाम पर ही मारवाड़ क्षेत्र को मालाणी कहते हैं ।

- भाई 'वीरम' (मल्लीनाथ ने अपने बेटे जगमाल को राजा न बनाकर वीरम को राजा बना दिया।)

<u>कान्हा (1423 – 1427)</u>

चूडा ने अपनी मोहिलाणी रानी के प्रभाव में आकर उसके पुत्र कान्हा को अपना उत्तराधिकारी बनाया जबकि रणमल, चूडा का ज्येष्ठ पुत्र

नोट – *प्रिय पाठकों , **यह एक sample मात्र है** यह अध्याय अभी यहीं समाप्त नही हुआ है, इसमें अभी और भी कंटेंट पढ़ना बाकी है जो आपको **RAS मुख्य परीक्षा के** कम्पलीट नोट्स में पढ़ने को मिलेगा / यह तो एक sample मात्र ही है/ **RAS मुख्य परीक्षा के** कम्पलीट नोट्स खरीदने के लिए हमारे संपर्क नंबर पर कॉल करें , धन्यवाद/*

संपर्क करें – 8233195718, 9694804063, 8504091672

हमारे नोट्स के अन्य परीक्षाओं में रिजल्ट (Result)-

RAS Pre. परीक्षा 2021 में हमारे नोट्स में से 73/74 प्रश्न आये

पटवारी परीक्षा 2021 में 23 अक्तूबर की पहली शिफ्ट में हमारे नोट्स में से 79 प्रश्न आये

पटवारी परीक्षा 2021 में 23 अक्तूबरकी दूसरी शिफ्ट में हमारे नोट्स में से 103 प्रश्न आये

पटवारी परीक्षा 2021 में 24 अक्तूबर की पहली शिफ्ट में हमारे नोट्स में से 96 प्रश्न आये

पटवारी परीक्षा 2021 में 24 अक्तूबर की दूसरी शिफ्ट में हमारे नोट्स में से 91 प्रश्न आये

राजस्थान SI 2021 की परीक्षा कि परीक्षा में भी कई प्रश्न आये हैं -

Proof देखने के लिए हमारे youtube चैनल (InfusionNotes) पर इसकी वीडियो देंखें या हमारे नंबरों पर कॉल करें /

अध्याय - 2

19 वीं – 20वीं शताब्दी की प्रमुख घटनाएँ -

- **किसान एवं जनजाति आंदोलन**

राजस्थान में आजादी से पूर्व कई किसान एवं आदिवासी आंदोलन हुए जो उन पर किये जा रहे अत्याचारों के विरोध में हुए। राजस्थान में कई रियासतें किसानों से मनमना कर "लाग" वसूलती थी। इनके विरोध में समाय समय पर किसान नेताओं ने राजस्थान में किसान आंदोलन किये। इसी तरह आदिवासियों के ऊपर हुए अत्याचारों के विरोध में भी कई आंदोलन हुए जिनका नेतृत्व आदिवासी नेताओं ने किया जो राजस्थान में आदिवासी आन्दोलन राजस्थान में किसान आन्दोलन

बिजौलिया किसान आंदोलन

बिजौलिया किसान आंदोलन (बिजौलिया किसान आंदोलन हिंदी में): बिजौलिया किसान आंदोलन राजस्थान से शुरू होकर पुरे देश में फैलने वाला एक संगठित किसान आंदोलन था। बिजौलिया किसान आंदोलन इतिहास का सबसे लंबा चला अहिंसक किसान आंदोलन था, जो कि करीब 44 साल तक चला |

बिजौलिया किसान आन्दोलन (1897-1941 44 वर्षों तक) -

जिला भीलवाड़ा

बिजौलिया का प्राचीन नाम विजयावल्ली

संस्थापक अशोक परमार

बिलोलिया, मेवाड़ रियासत का ठिकाना था।

कारण

1. लगान की दरें अधिक थी।

2. लाग-बाग कई तरह के थे।

3. बेगार प्रथा का प्रचलन था।

बिजौलिया किसानों से 84 प्रकार का लाग-बाग (टेक्स) वसुल किया जा जाता था।

बिजौलिया के किसान धाकड़ जाति के लोग अधिक थे।

बिजौलिया किसान आन्दोलन तीन चरणों में पुरा हुआ था।

1. 1897 से 1916 नेतृत्व -साधु सीताराम दास

2. 1916 से 1923 नेतृत्व - विजयसिंह पथिक

3. 1923 से 1941 नेतृत्व - माणिक्यलाल वर्मा, हरिभाऊ उपाधाय जमनालाल बजाज, रामनारायण चौधरी

<u>प्रथम चरण (1897 से 1916 तक) से</u>

- 1897 में बिजौलिया के किसान राम धाकड़ के मृत्युभोज के अवसर पर गिरधारीपूरा गाँव से एकत्रित होते और ठिकानेदार की शिकायत मेवाड़ के महाराणा से करने का निश्चिय करते हैं। और नानजी पटेल व ठाकरी पटेल को उदयपुर भेजा जाता है जहां मेवाड़ के महाराणा फतेहसिंह ने कोई भी कार्यवाही नहीं की। इस समय बिजौलिया के ठिकानेदार रावकृष्ण सिंह ने 1903 में किसानों पर चंवरी कर लगाया।
- चंवरी कर एक विवाह कर था इसकी दर 5 रुपये थी। 1906 में कृष्णसिंह मर गया और नये ठिकानेदार राव पृथ्वीसिंह बने जिन्होंने तलवार बंधाई कर (उत्तराधिकारी शुल्क किसानों पर लागु कर दिया।
- 1915 में पृथ्वी सिंह ने साधु सीताराम दास व इसके सहयोगी फतहकरण चारण व ब्रह्मदेव को बिजौलिया से निष्कासित कर दिया।

द्वितीय चरण (1916 से 1923 तक)

- 1917 में विजयसिंह पथिक ने ऊपरमात पंचबोर्ड (ऊपरमात पंचायत) का गठन मन्ना पटेल की अध्यक्षता में किया। बिजौलिया किसान आन्दोलन को लोकप्रिय व प्रचलित करने वाले समाचार पत्र प्रताप 2. ऊपरमात डंका थे।
- 1919 में बिन्द्रलाल भट्टाचार्य आयोग को बिजौलिया किसान आन्दोलन की जांच के लिए भेजा जाता है। इस आयोग ने लगान कि दरें कम करने तथा लाग-बागों को हटाने की सिफारिश की किन्तु मेवाड़ के महाराणा ने इसकी कोई भी सिफारिश स्वीकार नहीं की।
- 1922 में राजपुताना का ए.जी. जी. रॉबर्ट हॉलेण्ड बिजौलिया आते हैं और किसानों और ठिकानेदार के मध्य समझौता करवाते हैं यह समझोता स्थाई सिद्ध नहीं हुआ।
- 1923 में विजय सिंह पथिक को गिरफ्तार कर लिया जाता है और 6 वर्ष की सजा सुना देते है।

तृतीय चरण (1923 से 1941)

- 1941 में मेवाड़ के प्रधानमंत्री सर टी. विजयराघवाचार्य थे इन्होंने अपने राजस्व मंत्री डा. मोहन सिंह मेहता को बिजौलिया भेजा इसनें ठिकानेदार व किसानों के मध्य समझौता किया लगान की दरें कम कर दी. अनेक लाग-बाग हटा दिये और बेगार प्रथा को समाप्त कर दिया।
- यह किसान आन्दोलन सफलता पूर्वक समाप्त होता है।
- इस किसान आन्दोलन में दो महिलाओं रानी भीलनी व उदी मालन ने भाग लिया।
- किसान आन्दोलन के समय माणिक्यलाल वर्मा ने पछिड़ा गीत लिखा
- बेगू (चित्तौड़गढ़) किसान आंदोलन | Begu Kisan Andolan
- बेगू (चित्तौड़गढ़) मेवाड़ राज्य का ठिकाना था।
- बेगू के किसानों ने अपने यहाँ लागबाग, बेगार और ऊँचे लगान के विरुद्ध 1921 ई. में मेनाल (भीलवाड़ा) नामक स्थान पर आन्दोलन शुरू किया।
- इसका नेतृत्व रामनारायण चौधरी ने किया।

- 1922 में मंडावरी में किसान आंदोलन को गोलियों की बौछार से तितर-बितर किया गया। यहाँ सिपाहियों की गोलियों का शिकार खुद एक सिपाही फेज खां हुआ।
- किसानों के विरोध के आगे ठाकुर अनूप सिंह को झुकना पड़ा और राजस्थान सेवा संघ और अनूप सिंह के बीच समझौता हो गया।
- मेवाड़ सरकार ने इस समझौते को बोल्शेविक सन्धि कहकर अनूपसिंह को उदयपुर में नजरबंद कर दिया।
- 13 जुलाई, 1923 को गोविन्दपुरा में किसान सम्मेलन पर सरकार ने गोलियां चलवायी जिसमें रूपाजी व कृपाजी नामक किसान मारे गये।
- बेगू में किसानों की शिकायतों की जाँच हेतु सरकार ने बंदोबस्त आयुक्त श्री ट्रेन्च की अध्यक्षता में आयोग का गठन किया।
- सेटलमेन्ट कमिश्नर टेन्च की दमनकारी कार्यवाही से विजयसिंह पथिक पकड़े गये तथा उन्हें 3.5 वर्ष कठोर कारावास की सजा भुगतनी पड़ी।

<u>बूंदी का किसान आंदोलन</u>

राजस्थान में भूमि बंदोबस्त व्यवस्था के बावजूद भी गावों में धीरे-धीरे महाजनों का वर्चस्व बढ़ने लगे। 'साद' प्रथा के अंतर्गत प्रत्येक क्षेत्र में महाजन से लगान की अदायगी का आश्वासन् लिया जाने लगा। इस व्यवस्था से किसान अधिकाधिक रूप से महाजनों पर आश्रित होने लगे तथा उनके चंगुल में फंसने लगे। 19 वीं सदी के अंत में व 20 वीं सदी के शुरू में जागीरदारों द्वारा किसानों पर नए-नए कर लगाये जाने लगे और उनसे बड़ी धनराशि एकत्रित की जाने लगी। जागीरदारी व्यवस्था शोषणात्मक हो गई. किसानों से अनेक करों के अतिरिक्त विभिन्न प्रकार के लाग-बाग लेने की प्रथा भी प्रारंभ हो गई. ये लागें दो प्रकार की थी

1. स्थाई लाग

2. अस्थाई लाग (इन्हें कभी-कभी लिया जाता था।)

इस कारण से जागीर क्षेत्र में किसानों की स्थिति अत्यंत दयनीय हो

नोट – प्रिय पाठकों , **यह एक sample मात्र है** यह अध्याय अभी यहीं समाप्त नही हुआ है, इसमें अभी और भी कंटेंट पढ़ना बाकी है जो आपको **RAS मुख्य परीक्षा के** कम्पलीट नोट्स में पढ़ने को मिलेगा / यह तो एक sample मात्र ही है/ **RAS मुख्य परीक्षा के** कम्पलीट नोट्स खरीदने के लिए हमारे संपर्क नंबर पर कॉल करें , धन्यवाद/

संपर्क करें – 8233195718, 9694804063, 8504091672

हमारे नोट्स के अन्य परीक्षाओं में रिजल्ट (Result)-

RAS Pre. परीक्षा 2021 में हमारे नोट्स में से 73/74 प्रश्न आये

पटवारी परीक्षा 2021 में 23 अक्तूबर की पहली शिफ्ट में हमारे नोट्स में से 79 प्रश्न आये

पटवारी परीक्षा 2021 में 23 अक्तूबरकी दूसरी शिफ्ट में हमारे नोट्स में से 103 प्रश्न आये

पटवारी परीक्षा 2021 में 24 अक्तूबर की पहली शिफ्ट में हमारे नोट्स में से 96 प्रश्न आये

पटवारी परीक्षा 2021 में 24 अक्तूबर की दूसरी शिफ्ट में हमारे नोट्स में से 91 प्रश्न आये

राजस्थान SI 2021 की परीक्षा कि परीक्षा में भी कई प्रश्न आये हैं -

Proof देखने के लिए हमारे youtube चैनल (InfusionNotes) पर इसकी वीडियो देखें या हमारे नंबरों पर कॉल करें /

FREE SAMPLE

अध्याय – 3

राजस्थान की धरोहर :- प्रदर्शन कलाएं व ललित कलाएं

प्रदर्शन कलाएं –

- **राजस्थान के किले एवं महल**

गागरोन का किला :

- वर्तमान झालावाड़ जिले में काली सिंध एवं आबू नदियों के किनारे स्थित है।
- गागरोन का किला एक जलदुर्ग है।
- इसका निर्माण डोड़ परमार शासकों ने करवाया था, इसलिए इसे 'डोड़गढ़' भी कहते है एवं 'थूलरगढ़' भी कहते है।
- देवेन सिंह खिंची ने बीजलदेव डोड़ को हराकर इस पर अधिकार कर लिया था। (चौहान कुल कल्पदुर्ग के अनुसार)

जैत्रसिंह :

- 1303 में जैत्रसिंह के समय अलाउद्दीन ने आक्रमण किया था।
- संत हमीदुद्दीन चिश्ती जैत्रसिंह के समय गागरोन आए थे, जिन्हें हम 'मीठे साहेब' के नाम से जानते है। इनकी दरगाह गागरोन के किले में बनी हुई है।

प्रताप सिंह :

- इन्हें हम संत पीपा के नाम से जानते है। इनके समय में फिरोज तुगलक ने गागरोन पर विफल आक्रमण किया था। संत पीपा की छत्तरी गागरौण में बनी हुई है।

अचलदास :

- 1423 ई. में मालवा का सुल्तान होशंगशाह गागरोन पर आक्रमण करता है। इस समय गागरौण के किले का पहला साका होता है।
- अचलदास खिंची अपने साथियों के साथ लड़ता हुआ मारा जाता है।
- लाला मेवाडों के नेतृत्व में जौहर किया जाता है।
- अचलदास खिंची की अन्य रानी का नाम : उमा सांखला (जांगलू)।
- शिवदास गाड़ण ने 'अचलदास खिंची री वचनिका' नामक ग्रंथ लिखा है।

पाल्हण सिंह (अचलदास का पुत्र, कुम्भा का भांजा) :

- 1444 ई. में मालवा का सुल्तान महमूद खिलजी गागरौण पर आक्रमण करता है।
- कुम्भा अपने सेनानायक धीरज देव को भेजकर पाल्हण सिंह की सहायता करता है। इस समय गागरौण के किले का दुसरा साका होता है। महमूद खिलजी ने गागरौण का नाम मुस्तफाबाद रख दिया था। (महासिरे मुहम्मदशाही में इसका जिक्र है)।
- बाद में गागरोन का किला महाराणा सांगा (मेवाड़) के अधिकार में आ गया था।
- सांगा ने अपने मित्र मेदिनी राय (चन्देरी) को यह किला दे दिया।
- 1567-68 ई. के चित्तौड़ आक्रमण के समय अकबर इसके किले में ठहरता है और फैजी इससे मुलाकात करता है।
- बाद में अकबर ने यह किला पृथ्वीराज राठौड़ को दे दिया। पृथ्वीराज राठौड़ ने इसी किले में 'बेलिक्रिसण रुक्मिणी' की रचना की।
- शाहजहाँ ने यह किला कोटा महाराजा माधोसिंह को दे दिया था। कोटा महाराजा दुर्जनसाल ने यहाँ मधुसूदन का मंदिर बनाया।
- जालिमसिंह झाला ने यहाँ जालिम कोट (परकोटा) का निर्माण करवाया।
- औरंगजेब ने यहा बुलन्द दरवाजे का निर्माण करवाया।
- इस किले में एक जौहर कुण्ड है, अंधेरी बावड़ी, गीध कराई (यहाँ राजनैतिक ऊंची पहाड़ी बंदियों को सजा दी जाती थी) है।
- गागरौण का किला बिना नींव के (चट्टानों पर) खड़ा है। कोटा राज्य की टकसाल यहीं पर थी।

चित्तौड़गढ़ का किला :

- दुर्गों का सिरमौर
- दुर्गों का तीर्थस्थल
- राजस्थान का गौरव
- इस किले का निर्माण चित्रांगद मौर्य ने किया था। (कुमारपाल प्रबन्ध के अनुसार)।
- 734 ई. में बापा रावल नें मान मौर्य को हराकर चित्तौड़ के किले पर अधिकार कर लिया।
- 1559 ई. मे उदयपुर की स्थापना तक चित्तौड़ मेवाड़ की राजधानी रहा है। यह राजस्थान का सबसे बड़ा आवासीय किला है।
- चित्तौड़ के किले में तीन साके हुए : 1303 में द्वारा रतनसिंह के समय : अलाउद्दीन। 1534 में द्वारा कर्मावती के समय : बहादुरशाह। 1568 में उदयसिंह के समय : अकबर।
- कुम्भा ने कुम्भश्याम/कुम्मा स्वामी का मंदिर, श्रृंगार चंवरी का मंदिर बनवाया।
- मोकल ने समिद्वेश्वर मंदिर का पुनर्निमाण करवाया।
- बनवीर ने नवलक्खा भण्डार बनवाया।
- बनवीर ने तुलजा भवानी का मंदिर बनवाया।
- चित्तौड़ के किले में रत्नेश्वर तालाब, भीमलव तालाब, मीरा मंदिर, कालिका मंदिर, लाखोटा बारी आदि प्रमुख है।
- चित्तौड़ का किला मेसा पठार पर मीनाकृति में बना हुआ है। धान्वन दुर्ग को छोड़कर इसमें अन्य सभी विशेषताएँ है।
- यह किला गम्भीरी एवं बेड़च नदियों के किनारे बसा हुआ।
- महाराणा कुम्भा ने इसमें 7 दरवाजे बनवाए।
- कुम्भा ने इसमें 'विजय स्तम्भ' (कीर्तिस्तम्भ) का निर्माण करवाया।
- चित्तौड़ के किले में एक जैन कीर्ति स्तम्भ बना हुआ है।
- यह राजस्थान की प्रथम इमारत है जिस पर 15 अगस्त 1949 को एक रुपये का डाक टिकट जारी किया गया।

FREE SAMPLE

कुम्भलगढ़ का किला :

- महाराणा कुम्भा ने 1448 ई. से 1458 ई. के बीच इसका निर्माण करवाया।
- कुम्भलगढ़ का वास्तुकार 'मण्डन' था।
- कुम्भलगढ़ वर्तमान राजसमंद जिले में स्थित है।
- कुम्भलगढ़ के किले को मेवाड़-मारवाड़ का सीमा प्रहरी कहते है।
- अत्यधिक ऊंचाई पर बना हुआ होने के करण अबुल फजल ने कहा था कि इस किले को नीचे से ऊपर की ओर देखने पर पगड़ी गिर जाती है।
- कुम्भलगढ़ के शीर्ष भाग में कटारगढ़ बना हुआ है जो कुम्भा का निजी आवास था। कटारगढ़ को 'मेवाड़ की आँख' कहते है।
- कुम्भलगढ़ के किले में ऊदा ने कुम्भा की हत्या (मामादेव कुण्ड के पास) की थी।
- उड़वाँ राजकुमार पृथ्वीराज की छत्तरी बनी हुई है। (12 खम्भों की)।
- पन्नाधाय उदयसिंह को लेकर कुम्भलढ़ के किले में आयी थी, उदयसिंह का राजतिलक यहीं हुआ था।
- महाराणा प्रताप ने भी अपना शुरुआती शासन् कुम्भलगढ़ से चलाया था।
- कुम्भलगढ़ के किले को मेवाड़ शासकों की 'संकटकालीन राजधानी' कहते है।
- कुम्भलगढ़ के किले में भी कुम्भा स्वामी का मंदिर बना हुआ।
- इसी किले में झाली रानी का मालिया बना हुआ है।
- कुम्भलगढ़ के दीवार की लम्बाई : 36 कि.मी.। चौड़ाई इतनी है कि आठ घोड़े समानान्तर दौड़ सकते है।
- कर्नल जेम्स टोड़ ने इसकी तुलना 'यूरोप के
- एट्रस्कन (सुदृढ़ प्राचीर, बुर्ज एवं कंगरो के कारण) से की ।

रणथम्भौर दुर्ग :

- वर्तमान में सवाई माधोपुर में स्थित है।
- 8वीं शताब्दी में चौहान शासकों द्वारा निर्मित।
- अण्डाकार आकृति में निर्मित।

- गिरि एवं वन दोनों दुर्गों की विशेषता रखता है।
- अबुल फजल : बाकी सब किले नंगे है पर रणथम्भौर दुर्ग बख्तरबंद है।
- हम्मीर के समय जलालुद्दीन खिलजी ने यहाँ एक विफल आक्रमण किया था।
- इस विफलता के बाद खिलजी ने कहा था : ऐसे 10 किलों को में मुसलमान के एक बाल के बराबर भी नहीं समझना।
- 1301 ई. : अलाउद्दीन ने रणथंभौर किले पर आक्रमण किया। उस समय रणथम्भौर का पहला साका हम्मीर के नेतृत्व में हुआ।
- रणथम्भौर का किला हम्मीर हठ के लिए प्रसिद्ध है।
- इस किले में : जोगी महल, सुपारी महल, रणत भंवर (गणेश जी का मंदिर : शादी की पहली कुमकुम पत्री यहाँ भेजी जाती है), पदम तालाब, जौरा-भौरां महल, पीर सदरुद्दीन की दरगाह।

अकबर कालीन टकसाल यहाँ .....

- **चित्रकला**

दोस्तों चित्र कला के उद्भव के संकेत मनुष्य की सभ्यता के प्रारंभिक काल से ही मिलने लगते हैं, जैसे-जैसे सभ्यता विकसित होती गयी, वैसे-वैसे चित्रकला में भी अधिक प्रवीणता देखि जाने लगी प्रागैतिहासिक काल में मनुष्य गुफाओं में रहता था तो उसने गुफाओं की दीवारों पर चित्रकारी की बाद में जब नगरीय सभ्यता सभ्यता का उदय होने लगा तो चित्रकारी गुफाओं से निकल कर दैनिक प्रायोजित होने वाले माध्यमों तक पहुँच गयी जिससे इसके नमूने बर्तनों , वस्त्रो आदि पर प्राप्त होने लगते हैं आईये अब हम राजस्थान की चित्रकला के बारे में पड़ते है

राजस्थानी चित्रकला-

राजस्थानी चित्रकला भारतीय चित्रकला के अंतर्गत अपना स्वतंत्र अस्तित्व रखती है और भारतीय कला के इतिहास में भी इसका अपना विशिष्ट स्थान है। राजस्थानी चित्रकला को केवल राजपूत शैली या हिन्दू शैली की संज्ञा देना उचित नहीं है वरन् यह अनेक शैलियों का समन्वित रूप है। कला मर्मज्ञ श्री कुमार स्वामी के अनुसार राजस्थानी चित्रकला एक समृद्ध कला का स्वरुप है

राजस्थान में प्रागैतिहासिक काल से ही चित्रकारी होती रही है। जिसके साक्ष्य चम्बल नदी घाटी क्षेत्र में तथा क्षेत्रों की पहाड़ियों के शैलाश्रयों में चित्रांकन के रूप में उपलब्ध हुए हैं। हड़प्पा युगीन कालीबांगा एवं ताम्रयुगीन अहाड़ पुरास्थलों के उत्खनन से प्राप्त मृदपात्रों पर की गई चित्रकला उल्लेखनीय है। प्राचीन काल में पोथियाँ लेखन के साथ चित्रित भी की जाती रही है। यह कार्य भोजपत्रों एवं ताड़पत्रों पर किया जाता था। इन पत्रों मे छेद कर ग्रंथित करने के कारण इन्हें ग्रंथ कहा जाता था। इस प्रकार के अनेक ग्रंथ आज भी जैन भण्डारों एवं संग्रालयों में सुरक्षित है। जैसलमेर के भण्डारों मे 1060 ई. के दो ग्रंथ "ओध नियुक्ति वृत्ति' एवं "दश वैकालिका सूत्र चूर्णि' इस कला के दीप स्तम्भ है। इनमें कामदेव, हाथी, लक्ष्मी आदि का कलात्मक अकन प्रतिहार कालीन कला के महत्वपूर्ण साक्ष्य है 17वीं और 18वीं शताब्दी मे राजस्थान में मेवाड़, मारवाड़, बून्दी, कोटा, सिरोही, जैसलमेर, जयपुर आदि राज्यों में चित्रकला की नई शैलियाँ विकसित हुई.

राजस्थानी चित्रकला की विशेषताएँ

"राजस्थानी चित्र शैली विशुद्ध रूप से भारतीय है"- ऐसा मत श्री लारेन्स विनियम ने स्पष्ट रूप से प्रकट किया है। राजस्थानी शैली की प्रमुख विशेषतायें निम्नलिखित है-

प्राचीनता- राजस्थानी चित्रकला का इतिहास अति प्राचीन है। आरंभिक इतिहास से ही प्राप्त प्रमाणों में सूर्य, चाँद, पशुपति, पहाड़, ग्राम व प्रकृति आदि के चित्र मिलते है।

भारतीयता- यह विशुद्ध भारतीय शैली है और भारतीयता की छाप इसके प्रत्येक चित्र में परिलक्षित होती है।

कलात्मकता- राजस्थानी चित्रकला से कलात्मकता की झलक मिलती है क्योंकि इसकी शैली में अजन्ता शैली का समन्वय है। मध्यकाल मे मुगल शैली के सम्मिश्रण ने इसे एक नया रूप दिया।

रंग वैशिष्टय- राजस्थान चित्रकला में रंगों का जादू विशेष उल्लेखनीय है। लाल, पीला, श्वेत एवं हरा इस शैली के प्रमुख रंग हैं जिनके समन्वय से चित्रकारों ने चित्रों को अनूठा बना दिया है। चटकीले, चमकदार और दीप्तियुक्त रंगों का संयोजन शैली मे विशिष्ट है। लोक जीवन का सानिध्य- भित्ति चित्रण की परम्परा मे विकसित राजस्थानी अल्हड़ता और विषयवस्तु के चयन मे लोक जीवन की भावनाओं का बाहुल्य है।

भाव-प्रवरता का प्रार्चुय- राजस्थानी चित्रकला रस-प्रधान है। भावनाओं व भक्ति और श्रृंगार तथा राधाकृष्ण की माधुर्य भावना का सजीव चित्रण राजस्थानी चित्रकला की प्रमुख विशेषता है।

विषय वस्तु का वैविध्य- राजस्थानी चित्रकला विषय की दृष्टि से अत्यधिक विस्तृत है। राधाकृष्ण की विभिन्न लीलाओं, रामकथा, महाभारत और भागवत पुराण की विभिन्न कथायें, नायक नायिका, भेद, राग-रागिनी, बारह-मासा, ऋतुवर्णन, दरबारी जीवन, उत्सव, शिकार, राजा रानियों का चित्रांकन, लोक कथायें आदि असंख्य विषयों पर राजस्थानी चित्रकला आधारित है काव्य का चित्रण इस शैली की अपनी निजी विशेषता है। राजस्थान मे विषयों को लेकर इतने चित्र उपलब्ध है कि वे सभी एक जीवित संसार प्रस्तुत करते है।

देशकाल की अनुरूपता- राजपूत सभ्यता और संस्कृति तथा तत्कालीन परिस्थिति का चित्रण राजस्थानी चित्रकला में किया गया है। दुर्ग, प्रासाद, हवेलियाँ, दरबार आदि का राजपूती वैभव एवं भक्ति काल और रीति काल का सजीव चित्रण राजस्थानी चित्रकला मे ही पाया जाता है।

प्राकृतिक परिवेश की अनुरूपता- राजस्थानी चित्रकला में प्राकृतिक सरोवर, वन-उपवन, पेड़-पौधे, फूल-पत्तियाँ, पक्षियों से भरे हुए निकुंज, मृग, मयूर, सिंह, हाथी आदि का सजीव चित्रांकन किया गया है।

नारी सौन्दर्य- राजस्थानी चित्रकला शैली में नारी सुन्दरता की खान है। भारतीय नारी के आदर्श सौन्दर्य की उसमे पूरी छटा है। राजस्थान चित्रकला ने भारतीय नारी के सौन्दर्य को उभारने में अपना महत्वपूर्ण योगदान दिया है। नायिकाओं के आभूषण, अंग प्रत्यंग,नासिका और नेत्रों के अंकन अत्यन्त कलापूर्ण चित्रित हुए है।

उपरोक्त विवरणों के आधार पर कहा जा सकता है कि राजस्थान चित्रकला माधुर्य से ओत-प्रोत कला है।

राजस्थानी चित्रकला की शैलियों का वर्गीकरण राजस्थानी चित्रशैली का सबसे पहला वैज्ञानिक विभाजन 1916 ई. मे श्री आनंद कुमार स्वामी ने अपनी पुस्तक 'राजपूत पेंटिग्स में किया। राजस्थानी चित्रकला की शैलियों को भौगोलिक, सांस्कृतिक आधार पर चार प्रमुख स्कूलों में वर्गीकृत किया जा सकता है।

INFUSION NOTES
WHEN ONLY THE BEST WILL DO
FREE SAMPLE

मेवाड़ शैली

राजस्थानी चित्रकला का प्रारंभ जैन, अपभ्रंश, मालव आदि कलाओं के सामंजस्य से माना जाता है। राजस्थानी चित्रशैली की मूल शैली मेवाड़ चित्रशैली को माना जाता है। मेवाड़ स्कूल में चित्रकला को विकसित करने का श्रेय 'महाराणा कुंभा' को जाता है। मेवाड़ चित्र शैली का प्रथम चित्रित ग्रंथ 1260 ई. का 'श्रावक-प्रतिक्रमण सूत्र चूर्णि' को माना जाता है द्वितीय चित्रित ग्रन्थ' सुपासनाहचरित' है जिसमें स्वर्ण चूर्ण का प्रयोग किया गया। राजस्थानी चित्रकला के मेवाड़ स्कूल को विद्वानों द्वारा चार शैलियों में विभाजित किया गया है-

उदयपुर (मेवाड़) उपशैली

1. महाराणा जगत सिंह प्रथम इस समय के प्रशासक थे।

2. इस समय में प्रमुख चित्रित ग्रंथ महाराणा तेजसिंह के काल में रचित 'श्रावक प्रतिक्रमण सूत्र चूर्णि एवं सुपासनाहचरित', गीत गोविंदआख्यायिका, 'रामायण शूकर' आदि।
3. इस समय के प्रमुख चित्रकारसाहिबदीन, मनोहर, कृपाराम, उमरा, गंगाराम, भैरोराम, शिवदत्त आदि।
4. इस समय प्रमुख रंगपीला एवं लाल रंग का उपयोग किया गया।
5. इस शैली में आकृति व वेशभूषा गठीला शरीर, लम्बी मूंछे, छोटा कद, विशालनयन, सिर पर पगड़ी, कमर में पटका, लंबा घेरदारजामा, कानों मे मोती होती थी।
6. इस शैली में नारी आकृति व वेशभूषा के चित्र मीनाकृत आँखे, गरुड़ सी लंबी नाक, ठिगना कद, लम्बी वेणी, लहंगा एवं पारदर्शक ओढ़नी से बनाये जाते थे।
7. विशेष तथ्य

- महाराणा अमरसिंह प्रथम के समय तो मेवाड़ शैली पर मुगल प्रभाव लगा।
- मेवाड़ शैली पर गुर्जर व जैन शैली का सर्वाधिक प्रभाव है।
- मेवाड़ चित्रशैली में बादल युक्त नीला आकाश, कदंब के वृक्ष, हाथी, कोयल, सारस एवं मछलियों का चित्रण अधिक मिलता है।
- महाराणा जगतसिंह प्रथम ने राजमहल में 'चितेरो की ओवरी' नाम से कला विद्यालय स्थापित करवाया जिसे 'तस्वीरां रो कारखानों के नाम से जाना जाता है।

नाथद्वारा उपशैली

1. नाथद्वारा शैली के समय के शासक महाराणा राजसिंह थे।
2. इस शैली के प्रमुख चित्रित ग्रंथकृष्ण लीला, श्रीनाथ जी के विग्रह, ग्वाल-बाल, गोपियों आदि के चित्र प्रमुखतः मिलते हैं।
3. इस शैली के प्रमुख चित्रकार नारायण, चतुर्भुज, घासीराम, उदयराम, रेवा शंकर एवं कमला तथा इलायची (महिला चित्रकार)।
4. इस शैली में प्रमुख रंगहरा एवं पीला का प्रयोग किया गया।

5. इस शैली में पुरुष आकृति व वेशभूषा पुरुषों मे पुष्ट कलेवर, नंद एवं बालगोपालों को भावपूर्ण चित्रण हुआ करता था।
6. इस शैली में नारी आकृति व वेशभूषा छोटा कद, तिरछी एवं चकोर के समान आँखे, शारीरिक स्थूलता एवं भावों में वात्सल्य की झलक बनाई जाती थी।

विशेष तथ्य-

- इस चित्रशैली मे पिछवाई एवं भित्ती चित्रण प्रमख है।।
- इस चित्रशैली मे गाय, केले के वृक्षों को प्रधानता दी गई है।

देवगढ़ उपशैली

1. इस शैली के समय में प्रमुख विषयशिकार के दृश्य, राजसी ठाट-बाट, श्रृंगार, प्राकृतिक दृश्य।
2. इस शैली केप्रमुख चित्रकार कँवला, चोखा, बैजनाथ थे।
3. इस शैली में प्रमुख रंगपीले रंगों का बाहुलता से प्रयोग किया गया।
4. विशेष तथ्य-

- यह शैली मारवाड़, जयपुर व मेवाड़ की समन्वित शैली है।
- इस शैली को सर्वप्रथम डॉ. श्रीधर अंधारे ने प्रकाशित किया।
- महाराणा जयसिंह के समय रावत द्वारिका दास चूंडावत ने देवगढ़ ठिकाना (राजसमंद) 1680 ई. में स्थापित किया तदुपरान्त देवगढ़ शैली का जन्म हुआ।

चावण्ड उपशैली

1. इस शैली के प्रमुख शासक महाराणा प्रताप एवं महाराजा अमरसिंह थे।
2. इस शैली के प्रमुख चित्रकार नसीरदी (निसारदी) थे।
3. इस शैली का प्रमुख चित्रित ग्रंथ 'रंगमाला' था।

मारवाड़ शैली

राजस्थान चित्रशाला के मारवाड़ स्कूल को निम्नलिखित चित्र उपशैलियों में विभाजित किया गया है

जोधपुर उपशैली

1. जोधपुर शैली के प्रमुख शासक महाराजा जसवंत सिंह एवं महाराजा मानसिंह थे।
2. इस शैली के प्रमुख चित्रित ग्रंथ 'सूरसागर' व 'रसिकप्रिया' पर आधारित 'दुर्गा सप्तशती।
3. इस शैली के प्रमुख चित्रकार नारायणदास, अमरदास, बिशनदास, शिवदास, रतन जी भाटी थे।
4. इस शैली में प्रमुखतः रंगपीला उपयोग किया गया है।
5. इस शैली में पुरुष आकृति धनुष के समान बड़ी आँखे, घनी दाढ़ी-मूछे, लंबा व गठीला बदन, मोटी गर्दन, ऊँची पगड़ी, तुर्रा कलंगी, मोती की माला, ऊँट व घोड़े पर सवार पुरुष बताया गया है।
6. इस शैली में नारी आकृति गठीला बदन काले-लम्बे बाल, बादाम जैसी आँखे, पतली लंबी अंगुलियाँ, पतली कमर, कान तक भौंहे आदि।

विशेष तथ्य

- यह शैली स्वतंत्र रूप से 'राव मालदेव' के समय विकसित हुई.
- इस शैली मे आम के वृक्ष, ऊँट, घोड़ें एवं कुत्तों को प्रमुखता दी जाती है।
- रागमाला-1632 ई. वीर विट्ल दास चांपावत द्वारा चित्रित। राजा गजसिंह प्रथम के समय।
- कबूतर उड़ाती स्त्री, पेड़ की डाल पकड़कर झूलती हूं स्त्री का चित्रण।
- महाराजा मानसिंह के समय रसराज ग्रन्थ पर आधारित 62 चित्रों को एक

नोट – प्रिय पाठकों , **यह एक sample मात्र है** यह अध्याय अभी यहीं समाप्त नही हुआ है, इसमें अभी और भी कंटेंट पढ़ना बाकी है जो आपको **RAS मुख्य परीक्षा के**

कम्पलीट नोट्स में पढ़ने को मिलेगा / यह तो एक sample मात्र ही है/ **RAS मुख्य परीक्षा के** कम्पलीट नोट्स खरीदने के लिए हमारे संपर्क नंबर पर कॉल करें , धन्यवाद/

संपर्क करें – 8233195718, 9694804063, 8504091672

हमारे नोट्स के अन्य परीक्षाओं में रिजल्ट (Result)-

RAS Pre. परीक्षा 2021 में हमारे नोट्स में से 73/74 प्रश्न आये

पटवारी परीक्षा 2021 में 23 अक्तूबर की पहली शिफ्ट में हमारे नोट्स में से 79 प्रश्न आये

पटवारी परीक्षा 2021 में 23 अक्तूबरकी दूसरी शिफ्ट में हमारे नोट्स में से 103 प्रश्न आये

पटवारी परीक्षा 2021 में 24 अक्तूबर की पहली शिफ्ट में हमारे नोट्स में से 96 प्रश्न आये

पटवारी परीक्षा 2021 में 24 अक्तूबर की दूसरी शिफ्ट में हमारे नोट्स में से 91 प्रश्न आये

राजस्थान SI 2021 की परीक्षा कि परीक्षा में भी कई प्रश्न आये हैं -

Proof देखने के लिए हमारे youtube चैनल (InfusionNotes) पर इसकी वीडियो देंखें या हमारे नंबरों पर कॉल करें /

FREE SAMPLE

अध्याय – 4

राजस्थानी साहित्य की महत्वपूर्ण कृतियाँ एवं राजस्थान की बोलियाँ

- **राजस्थानी साहित्य-**

राजस्थानी भाषा के साहित्य की संपूर्ण भारतीय साहित्य में अपनी एक अलग पहचान है। राजस्थानी का चीन साहित्य अपनी विंशालता एवं अगाधता में इस भाषा की गरिमा, प्रोढ़ता एवं जीवन्तता का सूचक है । अनकानेक ग्रन्थों के नष्ट हो जाने के बाद भी हस्तलिखित ग्रन्थों एवं लोक साहित्य का जितना विंशाल भण्डार राजस्थानी साहित्य का है, उतना शायद ही अन्य भाषा में हो। विपुल राजस्थानी साहित्य के निर्माणकर्ताओं को शैलीगत एवं विंशयगत भित्रताओं के कारण निम्न पांच भागों कें विभक्त कर सकतें है।

1) जैन साहित्य,
2) चारण, साहित्य
3) ब्राह्मण साहित्य
4) संत साहित्य,
5) लोक साहित्य।

राजस्थान के मूर्धन्य कवि एवं साहित्यकार

जैन साहित्यः- जैन धर्मावलम्बियों गथा- जैन आचार्यो, मुनियों, यतियों, एवं श्रावको तथा जैन धर्म से प्रभावित साहित्यकारों द्वारा वृहद् मात्रा में रचा गया साहित्य जैन साहित्य कहलाता है। यह साहित्य विभिन्न प्राचीन मंदिरों के ग्रन्थागारों विपुल मात्रर मं संग्रहित है। यह साहित्य धार्मिक साहित्य है जो गद्य एवं पद्य दोनों में उपलब्ध है।

चारण साहित्यः- राजस्थान के चारण आदि विरूद्ध गायक कवियों द्वारा रचित अन्याय कृतियों को सम्मिलित रूप से चारण साहित्य कहते है। चारण साहित्य मुख्यतः पद्य में रचा गया है। इसमे वीर कृतियों का बाहुल्य है।

ब्राह्मण साहित्य:- राजस्थानी साहित्य में ब्राह्मण साहित्य अपेक्षाकृत कम मात्रा में उपलब्ध है कान्हड़दे प्रबन्ध, हम्मीरायण, बीसलदेव रासौ, रणमल छंद आदि प्रमुख गन्थ इस श्रेणी के ग्रन्थ है।

संत साहित्य:- मध्यकाल में भक्ति आन्दोलन की धारा में राजस्थान की षांत एवं सौम्य जलवायु मे इस भू-भाग पर अनेक निर्गुणी एवं सगुणी संत-महात्माओं का आविर्भाव हुआ। इन उदारमना संतों ने ईश्वर भक्ति में एवं जन-सामान्य कल्याणार्थ विपुल साहित्य की रचना यहाँ की लोक भाषा में की है। संत साहित्य अंधिकांशतः पद्यमय ही है।

लौक साहित्य:- राजस्थानी साहित्य में सामान्यजन द्वारा प्रचलित लोक शैली में रचे गये साहित्य की भी अपार थापी विद्यमान है। यह साहित्य लोक गाथाओं, लोकनाट्यों कहावतों, पहेलियों एवं लोक गीतों के रूप में विद्यमान है।

राजस्थानिक साहित्य गद्य एवं पद्य दोनो मे रचा गया है। इसका लेखन मुख्यतः निम्न विधाओं में किया गया है-

1) ख्यात:- राजस्थानी साहित्य के इतिहासपरक ग्रन्थ, जनको रचना तत्कालीन शासकों ने अपनी मान मर्यादा एवं वंशावली के चित्र हेतु करवाई 'ख्यात' कहलाते है। मुहणोत नैणसी री ख्यात, दयालदास को बीकानेर रा राठौड़ा री ख्यात आदि प्रसिद्ध है।

2) वंशावली:- इस श्रेणी की रचनाओं में राजवंशो की वंशावलियाँ विस्तृत विवरण सहित लिखी गई है। जैसे- राठौड़ा री वंशावली, राजपूतों री वंशावली आदि।

3) वात:- वात का अर्थ कथा या कहानी से है। राजस्थान मे ऐतिहासिक, पौराणिक, प्रेम परक एवं काल्पनिक कथनंको पर वात साहित्य अपार है।

4) प्रकास:- किसी वंश अथवा व्यक्ति विशेष की उपलब्धियाँ या घटना विशेष पर प्रकाश डालने वाली कृतियाँ 'प्रकाश' कहलाती है। राजप्रकाश, पाबू प्रकास, उदय प्रकाश आदि इनके मुख्य उदाहरण है।

5) वचनिका:- यह एक गद्य-पद्य तुकान्त रचना होती है, जिससे अन्त्यानुप्रास मिलता है राजस्थानी साहित्य में अचलदास खॉची री वचनिका एवं राठौड़ रतनसिंह जी महेस दासोत से वचनिका प्रमुख है। वचनिका मुख्यतः अपभ्रंष मिश्रित राजस्थानी मे लिखी हुई है।

6) मरस्याः- राजा या किसी व्यक्ति विशेष को मृत्योपरांत शोक व्यक्त करने के लिए रचित काव्य, जिसमें उसके व्यक्ति के चारित्रिक गुणों के अलावा अन्य क्रिया-कलापों का वर्णन किया जाता है।

7) दवावैंतः- यह उर्दू-फारसी की शब्दावली से युक्त राजस्थानी कलात्मक लेखन शैली है, किसी की प्रशंसा दोहों के रूप में की जाती है।

8) रासीः- राजाओं की प्रशसों में लिखे गए काव्य् ग्रन्थ जिनमें उनके युद्ध अभियानों व वीरतापुर्ण कत्यों के विवरण के साथ उनके राजवंश का विवरण भी मिलता है । बीसलदेव रासी, पृथ्वीराज रासौ आदि मुख्य रासौ ग्रन्थ है

9) वेलिः- राजस्थानी वेलि साहित्य में यहाँ के शासकों एवं सामन्तों की वीरता, इतिहास, विद्वता, उदारता, प्रेम-भावना, स्वामिभक्ति, वंशावली आदि घटनाओं का उल्लेख होता है। पृथ्वीराज राठोड़ लिखित 'वेलि किसन् रूकमणिरी' प्रसिद्ध वेलि ग्रन्थ है।

10) विगतः- यह भी इतिहास परक ग्रन्थ लेखन की शैली है। 'मारवाड़ रा परगना री विगत इस शैली की प्रमुख रचना है।

राजस्थान साहित्य की विशेषताएंः-

1) राजस्थानी साहित्य गद्य-पद्य की विशिष्ट लोकपरक शैलियों यथा- ख्यात, वात, वेलि, वचनिका दवावैत आदि रूपों में रचा गया है।

2) राजस्थानी साहित्य में वीर रस एवं श्रृंगार रस का अद्दभूद समन्वय देखने को मिलता है। यहाँ के कवि कमल एवं तलवार के धनी रहे है अतः इन्होंने इन दोनों विरोधाभासी रसों की अद्भूत समन्वय अपने सहित्य लेखन में किया है।

3) जीवन आदर्शों एवं जीवन मुल्यों का पोषण राजस्थानी साहित्य में मातृभूमि के प्रति दिव्य प्रेम, स्वामीभक्ति स्वाभीमान, स्वधर्मनिष्ठ, शरणागत की रक्षा, नारी के शील की रक्षा आदि जीवन मुल्यों एवं आादर्शो को पर्याप्त महत्व दिया है।

साहित्य में प्रथमः-

1) राजस्थान की प्राचिनतम रचनाः- भरतेश्वर बाहूबलिघोर (लेखकः वज्रसेन सूरि - 1168 ई. के लगभग), भाषा - मारू गुर्जन, विवरण - भारत और बाहूबलि के बीच हुए युद्ध का वर्णन।

2) संवतोल्लेख वाली प्रथम राजस्थानी रचना:- भारत बाहूबलि रास (1184 ई,) में श्षलिभद्र सूरि द्वारा रचित ग्रंथ भारू गुर्जर भाष में रचित रास परम्परा में सर्वप्रथम और सर्वाधिक पाठ वाला खण्ड काव्य।

3) वचनिका शैली की प्रथम सशक्त रचना:- अचलदास खींची से वचनिका (शिवदास गाड़ण)

4) राजस्थानी भाषा का सबसे पहला उपन्यास:- कनक सुन्दर (1903, में भरतिया द्वारा लिखित श्री नारायण अग्रवाल का 'चाचा' राजस्थानी का दूसरा उपन्यास है।)

5) राजस्थानी का प्रथम नाटक:- केसर विलास (1900- शिवचन्द्र भरतिया)

6) राजस्थानी में प्रथम कहानी:- विश्रांत प्रवास (1904- शिवचन्द्र भरतिया) (इस प्रकार शिवचन्द्र भरलिया राजस्थानी उपन्यास नाटक और कहानी के प्रथम लेखक माने जाते है।)

7) स्वातंत्र्योत्तर काल का प्रथम राजस्थानी उपन्यास:- आभैपटकी (1956- श्रीलाल नथमल जोशी)।

8) आधुनिक राजस्थानि की प्रथम काव्यकृति:- बादली (चन्द्रसिंह विरकाली)। यह स्वतंत्र प्रकृति की प्रथम महत्त्वपुर्ण कृति है।

राजस्थानी साहित्य की प्रमुख रचनाएँ:-

1) ग्रन्थ एवं लेखक पृथ्वीराज रासौ (कवि चन्द्र बरदाई):- इसमें अजमेर के अन्तिम चौहान सम्राट- पृथ्वीराज चौहान तृतीय के जीवन चरित्र एवं युद्धों का वर्णन। यह पिंगल में रचित वीर रस का महाकाव्य है। माना जाता है कि चन्द बरदाई पृथ्वीराज चौहान का दरबारी कवि एवं मित्र था।

2) **खुमाण रासौ** (दलपत विजय:- पिंगल भाषा के इस ग्रन्थ में मेवाड़ के बापा रावल से लेकर महाराजा राजसिंह तक के मेवाड़ शासकों का वर्णन है।

3) विरूद छतहरी, किरतार बावनौ (कवि दुरसा आढ़ा):- विरूद छतहरी महाराणा प्रताप को शौर्य गाथा है और किरतार बावनौ में उस समय की सामाजिक एवं आर्थिक स्थिति

को बतलाया गया है दुरसा आढ़ा अकबर के दरबारी कवि थे। इनकी पीतल की बनी मूर्ति अचलगढ़ के अचलेश्वर मंदिर में विद्यमान है।

4) बीकानेर रां राठौड़ा री ख्यात (दयालदास सिंढायच):- दो खंडो के ग्रन्थ में जोधपुर एवं बीकानेर के राठौड़ों के प्रारंम्भ से लेकर बीकानेर के महाराजा सरदार सिंह के राज्यभिषेक तक की घटनाओं का वर्णन है।

5) सगत रासौ (गिरधर आसिया) मनु प्रकाशन:-इस डिंगल ग्रन्थ में महाराणा प्रताप के छोटे भाई शक्तिसिंह का वर्णन है। यह 943 छंदों का प्रबंध काव्य है। कुछ पुस्तकों में इसका नाम सगतसिंह रासौ भी मिलता है।

6) हम्मीर रासौ (जोधराज):- इस काव्य ग्रन्थ में रणथम्भौर शासक राणा चौहान की वंशावली व अलाउद्दीन खिलजी से युद्ध एवं उनकी वीरता आदि का विस्तृत वर्णन है।

7) पृथ्वीराज विजय (जयानक):- संस्कृत भाषा के इस काव्य ग्रन्थ में पृथ्वीराज चौहान के वंशक्रम एवं उनकी उपलब्धियों का वर्णन किया गया है। इसमें अजमेर के विकास एवं परिवेश की प्रामाणिक जानकारी है ।

8) अजीतोदय (जगजीवन भट्ट):-मुगल संबंधों का विस्तृत वर्णन है। यह संस्कृत भाषा में है ।

9) ढोला मारू रा दूहा (कवि कल्लोल):- भाषा के श्रृंगार रस से परिपुर्ण इस ग्रन्थ में ढोला एवं मारू के प्रेमाख्यान का वर्णन है ।

10) गजगुणरूपक (कविया करणीदान):- इसमें जोधपुर के महाराजा गजराज सिंह के राज्य वैभव तीर्थयात्रा एवं युद्धों का वर्णन है गाड़ण जोधपुर महाराजा गजराज सिंह के प्रिय कवि थे ।

11) सूरज प्रकास (कविया करणीदान):-इसमें जोधपुर के राठौड़ वंश के प्रारंभ से लेकर महाराजा अभयसिंह के समय तक की घटनाओं का वर्णन है । साथ ही अभयसिंह एवं गुजरात के सूबेदार सरबुलंद खान के मध्य युद्ध एवं अभयसिंह की विजय का वर्णन है।

12) एकलिंग महात्म्य (कान्हा व्यास):-यह गुहिल शासकों की वंशावली एवं मेवाड़ के राजनैतिक व सामाजिक संगठन की जानकारी प्रदान करता है ।

13) मूता नैणसी री ख्यात मारवाड़ रा परगना री विगत (मुहणोत नैणसी):- जोधपुर महाराजा जसवंतसिंह प्रथम के दीवान नैणसी की इस कृति में राजस्थान के विभिन्न राज्यों के इतिहास के साथ-साथ समीपवर्ती रियासतों (गुजरात, काठियावाड़ बघेलखंड़ आदि) के इतिहास पर भी अच्छा प्रकाश डाला गया है। नैणसी को राजपूताने का 'अबुल फजल' भी कहा गया है। मारवाड़ रा परगना री विगत को राजस्थान का गजेटियर कह सकते हैं।

14) पद्मावत (मलिक मोहम्मद जायसी):- 1543 ई. लगभग रचित इस महाकाव्य में अलाउद्दीन खिलजी एवं मेवाड़ के शासक रावल रतनसिंह की रानी पद्मिनी को प्राप्त करने की इच्छा थी।

15) विजयपाल रासौ (नल्ल सिंह):- पिंगल भाषा के इस वीर-रसात्मक ग्रन्थ में विजयगढ़(करौली) के यदुवंशी राजा विजयपाल की दिग्विजय एवं पंग लड़ाई का वर्णन है। नल्लसिंह सिरोहिया शाखा का भाट था और वह विजयगढ़ के ययुवंशी नरेश विजयपाल का आश्रित कवि था।

16) नागर समुच्चय (भक्त नागरीदास):-यह ग्रन्थ किशनगढ़ के राजा सावंतसिंह (नागरीदास) की विभित्र रचनाओं का संग्रह है सावंतसिंह ने राधाकृष्ण की प्रेमलीला विंशयक श्रृंगार रसात्मक रचनाएँ की थी।

17) हम्मीर महाकाव्य (नयनचन्द्र सूरि):- संस्कृत भाषा के इस ग्रन्थ में जैन मुनि नयनचन्द्र सूरि ने रणथम्भौर के चौहान शासकों का वर्णन किया है ।

18) वेलि किसन् रुक्मणि री (पृथ्वीराज राठौड़):- सम्राट अकबर के नवरत्नों में से कवि पृथ्वीराज बीकानेर शासक रायसिंह के छोटे भाई तथा 'पीथल' नाम से साहित्य रचना करते थे। इन्होंने इस ग्रन्थ में श्री कृष्ण एवं रुक्मणि के विवाह की कथा का वर्णन किया है । दुरसा आढ़ा ने इस ग्रन्थ को पाँचवा वेद व 19वॉ पुराण

नोट – प्रिय पाठकों , **यह एक sample मात्र है** यह अध्याय अभी यहीं समाप्त नही हुआ है, इसमें अभी और भी कंटेंट पढ़ना बाकी है जो आपको **RAS मुख्य परीक्षा के**

कम्पलीट नोट्स में पढ़ने को मिलेगा / यह तो एक sample मात्र ही है/ **RAS मुख्य परीक्षा के** कम्पलीट नोट्स खरीदने के लिए हमारे संपर्क नंबर पर कॉल करें , धन्यवाद/

संपर्क करें – 8233195718, 9694804063, 8504091672

हमारे नोट्स के अन्य परीक्षाओं में रिजल्ट (Result)-

RAS Pre. परीक्षा 2021 में हमारे नोट्स में से 73/74 प्रश्न आये

पटवारी परीक्षा 2021 में 23 अक्तूबर की पहली शिफ्ट में हमारे नोट्स में से 79 प्रश्न आये

पटवारी परीक्षा 2021 में 23 अक्तूबरकी दूसरी शिफ्ट में हमारे नोट्स में से 103 प्रश्न आये

पटवारी परीक्षा 2021 में 24 अक्तूबर की पहली शिफ्ट में हमारे नोट्स में से 96 प्रश्न आये

पटवारी परीक्षा 2021 में 24 अक्तूबर की दूसरी शिफ्ट में हमारे नोट्स में से 91 प्रश्न आये

राजस्थान SI 2021 की परीक्षा कि परीक्षा में भी कई प्रश्न आये हैं -

Proof देखने के लिए हमारे youtube चैनल (InfusionNotes) पर इसकी वीडियो देखें या हमारे नंबरों पर कॉल करें /

FREE SAMPLE
INFUSION NOTES
WHEN ONLY THE BEST WILL DO

अध्याय – 6

महत्वपूर्ण विभूतियाँ

राजस्थान इतिहास की प्रसिद्ध महिला व्यक्तित्व

अंजना देवी चौधरी

अंजना देवी अग्रवाल का जन्म सीकर जिले के श्रीमाधोपुर में हुआ। राजस्थान सेवा संघ के कार्यकर्ता रामनारायण चौधरी से इनका विवाह हुआ। अंजना देवी ने बिजौलिया तथा बेगूं किसान आन्दोलन में महिलाओं का नेतृत्व किया। 1921-24 में मेवाड़, बूंदी राज्यों की स्त्रियों में राष्ट्रीयता, समाज सुधार की भावना को बढ़ावा दिया। 1924 ई. में बिजौलिया में लगभग 500 स्त्रियों के जत्थे का नेतृत्व करके नाजायज हिरासत से किसानों को छुड़या ये समस्त रियासती जनता में गिरफ्तार होने वाली पहली महिला थी। इन्हें बूंदी राज्य से निर्वासित भी होना पड़ा। 1934-36 ई. तक अजमेर के नारोली आश्रम में रह कर हरिजन सेवा कार्यों में भाग लिया।

रतन शास्त्री

रतन व्यास का जन्म खाचरोद, मध्य प्रदेश में हुआ। इनका विवाह हीरालाल शास्त्री से हुआ। रतन शास्त्री ने सन् 1939 ई. में जयपुर राज्य प्रजामण्डल के सत्याग्रह आन्दोलन में सक्रिय रूप से भाग लिया और सन् 1942 ई. के भारत छोड़ो आन्दोलन में भूमिगत कार्यकत्र्ताओं और उनके परिवारों की सेवा की। सन् 1955 ई. में इन्हें पद्मश्री से सम्मानित किया गया। 1975 ई. में पद्म विभुषण से सम्मानित राजस्थान की प्रथम महिला बनी।

नगेन्द्रबाला

नगेन्द्रवाता केसरीसिंह बारहठ की पोत्री थी। 1941-1947 ई. तक किसान आंदोलन में सक्रिय रही। स्वतंत्रता के पश्चात् ये कोटा की जिला प्रमुख रहीं। इन्हें राजस्थान की प्रथम महिला जिला प्रमुख होने का गौरव प्राप्त है। ये राजस्थान विधानसभा की सदस्य भी रही हैं।

जानकी देवी बजाज

जानकी देवी का जन्म मध्यप्रदेश के जावरा कस्बे में हुआ। इनका विवाह जमनालाल बजाज के साथ हुआ और इन्हें वर्धा में आना पड़ा। बजाज जी के देहान्त के बद इनको गौसेवा संघ की अध्यक्षा बनाया गया। ये जयपुर प्रजामण्डल के 1944 ई. के अधिवेशन की अध्यक्षा चुनी गई. विनोबा भावे के भूदान आन्दोलन के दौरान 108 कुओं का निर्माण करवाया। 1956 ई. में सरकार ने इन्हें 'पद्म विभूषण' से सम्मानित किया।

नारायणी देवी वर्मा

नारायणी देवी का जन्म सिंगोली मध्य प्रदेश में हुआ। इनका विवाह श्री माणिक्यलाल वर्मा से हुआ। बिजौलिया किसान आन्दोलन के समय इन्हें कुम्भलगढ़ के किले में बन्दी बना लिया गया। नवम्बर 1944 ई. में महिला शिक्षा तथा जागृति के लिए भीलवाड़ा में महिला आश्रम नाम की संस्था स्थापित कर महिलाओं के सर्वागीण विकास का कार्य अपने हाथ में लिया। 1970 में राज्यसभा से निर्वाचित किया गया।

शांता त्रिवेदी

शांता देवी जन्म नागपुर महाराष्ट्र में हुआ। इनका विवाह उदयपुर के परसराम त्रिवेदी के साथ हुआ। शांता त्रिवेदी ने 1947 ई. में उदयपुर में राजस्थान महिला परिषद् की स्थापना की।

मिस लुटर

मिस लूटर का पूरा नाम लिलियन गोडाफ्रेडा डामीथ्रोन लूटर था। इनका जन्म क्यामो, बर्मा में हुआ था। द्वितीय विश्व युद्ध के समय ये भारत आ गयी। उन्हीं दिनों जयपुर की

महारानी गायत्री देवी ने राजपूत घराने की लड़कियों की शिक्षा के लिए एक स्कूल शुरू किया। मिस लूटर को 1934 ई. में महारानी गायत्री देवी स्कूल में प्राचार्य पद पर नियुक्त किया गया। वे जीवन पर्यनत इस पद पर रही। महिला जगत में शिक्षा के प्रसार के लिए भारत सरकार ने 1970 ई. में इन्हें पद्मश्री से सम्मानित किया। 1976 ई. में ब्रिटिश सरकार ने भी महिला शिक्षा के लिए सम्मानित किया।

कालीबाई

डूंगरपुर जिले के रास्तापाल गाँव की भील कन्या कालीबाई अपने शिक्षक सेंगाभाई को बचाने के प्रयास में पुलिस द्वारा गोलियों से छलनी कर दी गई. इनकी मृत्यु 20 जून, 1947 हुई. रास्तापाल में इनकी स्मृति में एक स्मारक बना हुआ है।

किशोरी देवी

महिलाओं के प्रति अमानवीय व्यवहार करने वालों के विरोध में सीकर जिले के कटराथल नामक स्थान पर किशोरी देवी की अध्यक्षता में एक विशाल महिला सम्मेलन 1934 ई. में आयोजित किया गया। जिसमें क्षेत्र की लगभग 10,000 महिलाओं ने भाग लिया। किशोरी देवी स्वतंत्रता सेनानी सरदार हरलाल सिंह खर्रा की पत्नी थी।

श्रीमती सत्यभामा

बूंदी के स्वतंत्रता सेनानी नित्यानन्द नागर की पुत्रवधू सत्यभामा ने ब्यावर अजमेर आन्दोलन (1932 ई) का नेतृत्व किया। सत्यभामा को गांधी जी की मानस पुत्री के रूप में भी जाना जाता है।

कमला देवी

इनको राजस्थान की प्रथम महिला पत्रकार के रूप में जाना जाता है। इन्होंने ने अजमेर से प्रकाशित होने वाले प्रकाश पत्र से लेखन कार्य किया।

खेतूबाई

बीकानेर के स्वतंत्रता सेनानी वेद्य मधाराम की बहन, जिन्होंने दूधवा खारा किसान आन्दोलन में महिलाओं का नेतृत्व किया और आजीवन खादी धारण करने का प्रण लिया।

रमा देवी

इनका जन्म जयपुर में देख गंगासहाय के घर में हुआ। ये मात्र ।। वर्ष की आयु में विधवा हो गई. बाद में गांधी विचारधारा रखने वाले नेता तादूराम जोशी से पुनर्विवाह हुआ। विवाह के बाद इन्होंने खादी पहनना प्रारम्भ किया तथा नौकरी छोड़ पति के साथ राजस्थान सेवा संघ का कार्य किया। ।93। ई में बिजोतिया किसान आंदोलन में भाग लेने बिजौलिया गई जहां इन्हें गिरफ्तार कर लिया गया।

लक्ष्मीदेवी आचार्य

कलकत्ता में स्थापित बीकानेर प्रजामण्डल की संस्थापक सदस्या और अध्यक्ष भी रही। सविनय अवज्ञा आन्दोलन और स्वदेशी आन्दोलन में भाग लिया।

पन्नाधाय

पन्ना मेवाड़ के महाराणा उदयसिंह की धाय मां थी। मेवाड़ के सामन्त बनवीर ने महाराणा विक्रमादित्य की हत्या कर युवराज उदयसिंह की हत्या का भी प्रयास किया। पन्नधाय ने अपने पुत्र चंदन का बलिदान कर उदयसिंह को किले से बाहर भेजकर उसकी प्राण रक्षा की।

गोरां धाय

जोधपुर के अजीतसिंह को बचाने के लिए अपने पुत्र का बलिदान देने के कारण मारवाड़ की पन्ना धाय भी कहा जाता है।

हाड़ी रानी (सहल कंवर)

सलूम्बर (मेवाड़) के जागीरदार रतनसिंह चूंडावत की पत्नी जिसने अपना सिर काटकर निशानी के रूप में युद्ध में जाते हुए पति को दे दिया।

रानी पद्मिनी

रानी पद्मिनी चित्तौड़ की रानी थी, जिन्हें पद्मावति के नाम से जाना जाता है जिनके पति रतन सिंह थे। इनकी साहस और बलिदान की गौरवगाथा की मिसाल आज भी राजस्थान में दी जाती है। ऐसा कहा जाता है कि जब खिलजी वंश का क्रूर शासक अलाउद्दीन खिलजी रानी पद्मावति को पाने के लिए चित्तौड़ के किले को घेर लिया था, तब रानी ने आग में कूदकर अपने प्राण की आहुति दे दी। लेकिन अपने सतीत्व पर आँच नहीं आने दिया।

मीरा बाई

मीरा बाई जन्म 1498 में राजस्थान के पाली स्थित कुड़की गाँव में हुआ था। इनका नाम कृष्ण भक्ति शाखा की अहम कवयित्रियों में लिया जाता है। ये सोलहवीं शताब्दी की विश्व चर्चित हिन्दू कवयित्री थी तो वहीं इन्हें कृष्ण का परम भक्त के नाम से भी जाना जाता है।

डूंगरपुर के नागर ब्राह्मण परिवार में जन्मी कृष्ण भक्त कवयित्री गवरी बाई को वागड़ की मीरा भी कहा जाता है। डूंगरपुर के महारावल शिवसिंह ने गवरीबाई के लिए 1829 ई. में बालमुकुन्द मंदिर का निर्माण करवाया।

अल्लाह जिलाई बाई

केसरिया बालम आओ नी पधारो म्हारे देस ..... गीत प्रख्यात मांड़ गायिका अल्लाह जिलाई बाई द्वारा गाया गया है। इनका जन्म 1 फरवरी 1902 ई. को बीकानेर में हुआ मांड़ गायिकी में विशिष्ट योगदान के लिए सन् 1982 में इन्हें पद्मश्री से सम्मानित किया गया। बाईजी को सन् 1983 में रॉयल अल्बर्ट हॉल में बी. बी. सी लंदन द्वारा कोर्ट सिंगर अवार्ड दिया गया।

गवरी देवी

गवरी देवी का जन्म 1920 ई में जोधपुर में हुआ। मास्को में आयोजित भारत महोत्सव में गवरी देवी ने मांड़ गायकी से श्रोताओं को सम्मोहित कर प्रदेश का नाम रोशन किया।

कालबेलिया नर्तकी गुलाबो

राजस्थान की आन, बाण, शान कही जाने वाली प्रसिद्ध कालबेलिया नर्तकी गुलाबो ने नृत्यकला के जरिए इन्होंने .....

- **प्रमुख व्यक्ति**

· विश्व में प्रत्येक कालखंड में ऐसे व्यक्तियों ने जन्म लिया है, जिन्होंने अपने कार्यों से समाज को एक नई राह दिखाई है।

जिन्होंने अपने व्यक्तित्व तथा अपने कार्यों से समाज को ही नई राह नहीं दिखाई अपितु देश को भी नई राह दिखाने की कोशिश की और अपने राज्यों का अपने कुटुंब का अपने माता-पिता का नाम रोशन किया।

· ऐसे ही कुछ व्यक्तियों का विवरण नीचे दिया जा रहा है जिन्होंने राजस्थान का नाम इस देश में ही नहीं बल्कि संसार में भी रोशन किया है।

हीरालाल शास्त्री

जन्म 24 नवंबर 1899 जन्म स्थल जोबनेर जयपुर वनस्थली विद्यापीठ नमक महिला शिक्षण संस्थान के संस्थापक शास्त्री जी भारतीय देशी राज्य लोक परिषद् के प्रधानमंत्री तथा 30 मार्च 1949 को वृद्ध राजस्थान के प्रथम मुख्यमंत्री बने टोंक जिले के निवाई तहसील के वनस्थली ग्राम में स्थित जीवन कुटीर नामक संस्था के संस्थापक शास्त्री जी 1958 से 62 तक सवाई माधोपुर के लोकसभा सदस्य रहे तथा 28 दिसंबर 1974 को स्वर्ग

सिधार गए प्रत्यक्ष जीवन शास्त्र नामक पुस्तक का लेखक किया एवं प्रशिक्षण नमो नमो नमः गीत लिखा जो बहुत लोकप्रिय हुआ

मोतीलाल तेजावत

16 मई 1887 जन्म स्थल कोलिया उदयपुर आदिवासियों का मसीहा बाबू जी का जाने वाली स्वतंत्रता सेनानी मोतीलाल तेजावत ने 1920 में चित्तौड़गढ़ स्थित मात्र कुंडिया नामक स्थान पर एक ही आंदोलन प्राप्त किया जिसके माध्यम से सर्वप्रथम पोलो में राजनीतिक जागृति पैदा हुई उदयपुर चित्तौड़गढ़ से लोकसभा सदस्य राजस्थान खादी ग्रामोद्योग बोर्ड के अध्यक्ष रहे तेजावत दिसंबर 1963 को स्वर्ग सिधार गए

भोगीलाल पांड्या

"वागड़ की गांधी" नाम से लोकप्रिय भोगीलाल पंड्या का जन्म आदिवासी जिला डूंगरपुर के सीमलवाडा ग्राम में 13 नवंबर, सन् 1904 को हुआ। इन्होंने आदिवासी समाज में आत्म स्वाभिमान, शिक्षा का प्रकाश, कुप्रथाओं से छुटकारा और जागरूकता का दीप प्रज्वलित किया। 15 मार्च, 1938 को डूंगरपुर में "वनवासी सेवा संघ" की स्थापना की। 1 अगस्त, 1944 को डूंगरपुर में प्रजामंडल की स्थापना की। 1975 में भारत सरकार द्वारा पद्म विभूषण से अलंकृत

इसका उद्देश्य डूंगरपुर रियासत में महारावल की छत्रछाया में उत्तरदाई शासन् की स्थापना करना था। 31 मार्च, 1981 को इनकी मृत्यु हुई.

गोकुल भाई भट्ट

जन्म 25 जनवरी 1818 उपनाम राजस्थान के गांधी जन्म स्थल हाथल सिरोही जमनालाल बजाज पुरस्कार 1982 से सम्मानित भट्ट जी मैं 1972 से 1981 तक मध्य निषेध के लिए अथक प्रयास किया सन् 1948 ईस्वी में राष्ट्रीय कांग्रेस अधिवेशन के स्वागताध्यक्ष भट्ट जी ने सिरोही राज्य में प्रजामंडल की स्थापना की एवं राजपूताना प्रांतीय देशी राज्य प्रजा परिषद् के अध्यक्ष पद को सुशोभित किया आबू का राजस्थान में विलय उनके प्रयासों से हुआ

मोहनलाल सुखाडिया

जन्म 31 जुलाई 1916 जन्म स्थल नाथद्वारा राजसमंद राजस्थानी राजस्थान के निर्माता मोहनलाल सुखाडिया 13 नवंबर 1956 को राजस्थान के मुख्यमंत्री बने तथा 17 वर्ष तक राजस्थान में शासन् किया राजस्थान में सर्वाधिक समय तक मुख्यमंत्री बने रहने का गौरव प्राप्त है उन्होंने इंदुबाला के साथ अंतरजातीय विवाह करके मेवाड़ में रहते सामाजिक जीवन में क्रांति लाई राजस्थान में जागीरदारी प्रथा के उन्मूलन में श्री सुखाड़िया की भूमिका सर्वप्रथम राजस्व मंत्री के रूप में तथा तत्पश्चात मुख्यमंत्री के रूप में महत्वपूर्ण रही राजस्थान में मुख्यमंत्री तू के पश्चात वे दक्षिण भारत के 3 राज्य कर्म से कर्नाटक आंध्र प्रदेश तमिलनाडु के राज्यपाल रहे

जमुना लाल बजाज

जन्म 4 नवंबर 1889 जन्म स्थल काशी का बास सीकर गांधीजी के पांचों पुत्र के जाने वाले जमनालाल बजाज ने गांधीजी के नवजीवन साप्ताहिक हिंदी संस्थान का समूचा वित्तीय भार उठाया अंग्रेजों द्वारा दी गई रायबहादुर नामक उपाधि को वापस लौटा कर संपूर्ण जीवन स्वाधीनता संग्राम के समर्पित कर दिया 1938 में जयपुर प्रजामंडल के अध्यक्ष बने जमुना लाल बजाज ने राजस्थान सेवा संघ को पुनर्जीवित कर के महान कार्य किया

हरिदेव जोशी

जन्म 17 दिसंबर 1921 जन्म स्थल खंडू ग्राम बांसवाड़ा बाबा लक्ष्मण दास की प्रेरणा से इन्होंने सार्वजनिक जीवन में प्रवेश किया तीन बार राजस्थान के मुख्यमंत्री रहे हरिदेव जोशी ने दैनिक नव जीवन को कांग्रेस संदेश नमो पत्रिकाओं का संपादन किया डूंगरपुर के आदिवासियों को राष्ट्रीय आंदोलन के लिए जागृत करने का महत्वपूर्ण कार्य किया

रामनारायण चौधरी

जन्म 1800 ईस्वी जन्म स्थल नीमकाथाना सीकर 1934 में गांधी जी की दक्षिणी भारतीय हरिजन यात्रा के दौरान हिंदी सचिव के रूप में चौधरी ने राजस्थान में जन चेतना

नोट – प्रिय पाठकों , **यह एक sample मात्र है** यह अध्याय अभी यहीं समाप्त नही हुआ है, इसमें अभी और भी कंटेंट पढ़ना बाकी है जो आपको **RAS मुख्य परीक्षा के** कम्पलीट नोट्स में पढ़ने को मिलेगा / यह तो एक sample मात्र ही है/ **RAS मुख्य परीक्षा के** कम्पलीट नोट्स खरीदने के लिए हमारे संपर्क नंबर पर कॉल करें , धन्यवाद/

संपर्क करें – 8233195718, 9694804063, 8504091672

हमारे नोट्स के अन्य परीक्षाओं में रिजल्ट (Result)-

RAS Pre. परीक्षा 2021 में हमारे नोट्स में से 73/74 प्रश्न आये

पटवारी परीक्षा 2021 में 23 अक्तूबर की पहली शिफ्ट में हमारे नोट्स में से 79 प्रश्न आये

पटवारी परीक्षा 2021 में 23 अक्तूबरकी दूसरी शिफ्ट में हमारे नोट्स में से 103 प्रश्न आये

पटवारी परीक्षा 2021 में 24 अक्तूबर की पहली शिफ्ट में हमारे नोट्स में से 96 प्रश्न आये

पटवारी परीक्षा 2021 में 24 अक्तूबर की दूसरी शिफ्ट में हमारे नोट्स में से 91 प्रश्न आये

राजस्थान SI 2021 की परीक्षा कि परीक्षा में भी कई प्रश्न आये हैं -

Proof देखने के लिए हमारे youtube चैनल (InfusionNotes) पर इसकी वीडियो देंखें या हमारे नंबरों पर कॉल करें /

FREE SAMPLE

INFUSION NOTES
WHEN ONLY THE BEST WILL DO

AVAILABLE ON/

01414045784

contact@infusionnotes.com

http://www.infusionnotes.com/